17 अक्टूबर 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 14 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर(द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 19 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2012 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों में से कुछ अक्टूबर (प्रथम) के अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं, शेष समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

राजकोट (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रातः पूजन-विधान के उपरान्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी द्वारा प्रातः समयसार, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि के प्रवचन में युवाओं की रुचि विशेष रूप से दिखाई दी।

इस अवसर पर प्रातः गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन भी हुये। कार्यक्रम में प्रतिदिन 600-700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर किले अन्दर के बड़े मन्दिर में प्रातः 7 से 8.30 बजे तक नित्यनियम पूजन एवं दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त 9 से 10 बजे तक अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के कर्ताकर्म अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर में 3 से 4 बजे तक श्रीमती कमला भारिल्ल द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर महिलाओं की कक्षा ली गई। सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त 8 से 8.45 तक पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रभावी प्रवचन हुये। तीनों समय आशातीत उपस्थिति से वातावरण उत्साहवर्धक रहा।

रात्रि में प्रवचन के पूर्व सुश्री सर्वदर्शी भारिल्ल द्वारा बालकक्षा चलाई गई। प्रवचन के उपरान्त सर्वदर्शी भारिल्ल एवं श्रीमती श्रद्धा जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम चलाये गये, जिनमें विशेष धर्मप्रभावना हुई।

अन्तिम दिन सभी कार्यकर्ताओं को सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पण्डित श्री रतनचंदजी भारिल्ल को अभिनन्दन-पत्र भेंट करते हुए सर्वज्ञजी भारिल्ल एवं सर्वदर्शी भारिल्ल को प्रतीक चिह्न प्रदान किये गये।

- मलूक चन्द जैन

बड़ौदा (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रातः नित्यनियम पूजन के उपरान्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार की 17-18 गाथा पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के 7वें अधिकार पर प्रवचन हुये।

क्षमावणी के दिन सोनगढ यात्रा की गई, जहाँ सम्मेदशिखर पंचकल्याणक की पत्रिका प्रदानकर आमंत्रण दिया गया।

तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा प्रातः समयसार (47 शक्तियाँ), दोपहर में पद्मनंदि पंचविंशतिका के आधार पर दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित मनोजजी करेली एवं पण्डित वैभवजी पिड़ावा द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

प्रातः दशलक्षण मण्डल विधान का भी आयोजन किया गया। प्रतिदिन सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन एवं सिद्धायतन के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुये। महिलाओं की कक्षा श्रीमती ममता जैन धर्मपत्नी श्री आदीशजी जैन दिल्ली द्वारा ली गई।

इस अवसर पर मुम्बई, दिल्ली, जयपुर, कोटा, इन्दौर, जबलपुर, औरंगाबाद, कोल्हापुर, सिवनी, अशोकनगर आदि नगरों से आये हुये लगभग 300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। दिनांक 29 सितम्बर को समापन समारोह में आसपास के नगरों में प्रवचनार्थ पधारे हुये विद्वानों का सम्मान किया गया।

- डॉ. गुलाबचन्द जैन

भागलपुर-चम्पापुर : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रातः नित्यनियम पूजन के पश्चात् ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रातः एवं सायं दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित जागेशजी शास्त्री द्वारा कक्षा भी ली गई।

खुरई (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर समाज के विशेष आग्रह पर श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील एवं विदुषी प्रतीति शास्त्री पधारे। आपके द्वारा प्रातः समयसार की 31वीं गाथा पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर सरल-सुबोध भाषा में हुये विशेष व्याख्यानों को समाज ने विशेष तौर पर सराहा। विदुषी प्रतीति शास्त्री ने दोपहर में इष्टोपदेश की कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम तत्त्वज्ञान से भरपूर होने से

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

सम्पादकीय - 86

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १५६

अब प्रस्तुत गाथा १५६ में पर-चारित्र में प्रवर्तन करने वाले जीवों की मुख्यता की बात करते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है -

जो परदव्वम्हि सुहं असुहं रागेण कुणदि जदि भावं।
सो सगचरित्तभट्ठो परचरियचरो हवदि जीवो।।१५६।।

(हरिगीत)

जो राग से पर द्रव्य में करते शुभाशुभ भाव हैं।
पर-चरित में लवलीन वे स्व-चरित्र से परिभ्रष्ट है।।१५६।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि जो जीव राग से पर द्रव्य में अर्थात् शुभ या अशुभ भाव में प्रवर्तन करते हैं, वे जीव स्वचारित्र से भ्रष्ट होकर पर चारित्र का आचरण करने वाले हैं।

आचार्य श्री अमृतचन्द्रजी अपनी टीका में कहते हैं कि जो जीव वास्तव में मोहनीय कर्म के उदय का अनुसरण करनेवाली परिणति के वश होने के कारण राग रंजित उपयोग वाला वर्तता हुआ, पर द्रव्य में शुभ या अशुभ भाव को धारण करता है, वह जीव स्व-चारित्र से भ्रष्ट पर-चारित्र का आचरण करने वाला कहा जाता है; क्योंकि वास्तव में स्वद्रव्य में शुद्ध-उपयोगरूप परिणति स्वचारित्र है और परद्रव्य में विकारयुक्त हुई परिणति परचारित्र हैं।

कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं -

(दोहा)

आन दरब मैं शुभ-अशुभ, रागी करै जु भाव।
स्वक चारित्र करि भ्रष्ट सो, पर चारित्र लखाव।।१९६।।

(सवैया इकतीसा)

मोहनीय-करम कै उदैवस वरती है,
जीव राज्यमान तातैं पर मैं मगनता।
सुभ औ असुभ भाव दौनौ का करैया लसै,
स्वचारित्र भ्रष्ट परचारित्र लगनता।।
निज द्रव्य विषै सुद्ध उपयोग निज सोई,
निज चरित नाम ताकै अपनी जगनता।
परद्रव्य विषै राग रंजित है परचारी,
मिथ्या रूढ़िकारी जौ पै धारी है नगनता।।१९७।।

(दोहा)

स्व चरित अस पर चरित की, निज लख जानी बात।
तिन आतम आतम लख्या, दरसन-मोह विलात।।१९८।।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि अविद्या रूपी डाकन ने अज्ञानी जीवों को ग्रसित कर लिया है। जो जीव चैतन्य स्वभाव को छोड़कर राग में एकाकार हो जाते हैं, उन्हें मोहरूपी चुड़ैल ग्रस लेती है। जो जीव दया दानादि भावों से धर्म का लाभ होना मानते हैं, उन्हें आचार्य नशा में गाफिल हुआ जैसा कहते हैं। व्रत, संयम, भक्तिभाव तथा पाँच इन्द्रियों के विषय-कषाय के भाव असत् भाव हैं। जो उन्हें करते हैं, वे जीव आत्मिक शुद्ध आचरण से रहित हैं तथा पर समय के आचरण वाले हैं।

वस्तुस्वरूप की दृष्टि श्रद्धा एवं ज्ञान बिना व्रत-तप करते हैं, वे चौरासी लाख योनियों में जन्म-मरण किया करते हैं। यहाँ कहते हैं कि जो अपने शुद्ध आत्मा के आचरण को भूलकर व्रत, तप तथा विषय-कषाय आदि का आचरण करते हैं, वे जीव आत्मिक शुद्ध आचरण से रहित हैं। वे पर-समय के आचरण वाले हैं, उन्हें शुद्धि नहीं होती।

इसप्रकार इस गाथा के विश्लेषण में परचारित्ररूप पर समय का स्वरूप कहा। ●

शोक समाचार

1. बेलगांव (कर्नाटक) निवासी श्रीमती कुसुम पाटील धर्मपत्नी पण्डित एम.बी. पाटील का दिनांक 11 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

श्री एम.बी.पाटील मूलत: शेडवाल ग्राम के निवासी होने पर भी साहित्य-साधना एवं तत्त्वप्रचार के लिए 1988 को बेलगांव आ गये और समयसार आदि कुन्दकुन्द साहित्य का कन्नड में भाषान्तर करके छपवाया। शिविरों के माध्यम से साहित्य का प्रचार कर्नाटक प्रान्त में किया। अनेक नगरों में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन भी किया। बैंगलोर में दि.जैन ट्रस्ट द्वारा संचालित शिविरों में भी सेवाएं देते थे। आत्मधर्म कन्नड (मासिक) का भी अनेक वर्षों तक कार्य किया। इन सब कार्यों में आपकी पत्नी श्रीमती कुसुम पाटील बहुत सहयोग करती थीं। आपकी स्मृति में आपकी पुत्री विदुषी धवलश्री द्वारा संस्था को 2200/- रुपये प्राप्त हुये।

2. नागपुर (महा.) निवासी श्री सुन्दरलालजी मामाजी का दि. 5 अक्टूबर को 95 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया।

स्वामीजी की उपस्थिति में नागपुर में तत्त्वप्रचार करने विद्वान जाते रहे हैं, उन्हीं दिनों आप एवं आपकी पत्नी श्रीमती चम्पीबाई ने अनेक वर्षों तक विद्वानों की व्यवस्था की थी। बाद में भी मामाजी का सहयोग समाज को मिलता रहा। यहाँ निर्मित नवीन जिनमंदिर में भी आपका विशेष सहयोग रहा। आप नागपुर मुमुक्षु मण्डल के मूल आधार थे।

ज्ञातव्य है कि आप डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर (स्नातक-टोडरमल महाविद्यालय) एवं श्री अशोककुमारजी के मामाजी थे।

3. कोलारस (म.प्र.) निवासी चौधरी श्री रतनचन्द्रजी जैन का दिनांक 21 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

4. हिंगोली (महा.) निवासी जिनधर्मप्रेमी एवं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रेणुकादासजी दोडल का क्षमावाणी के दिन अत्यंत समताभावपूर्वक देहावसान हो गया। आपका जीवन सामाजिक एवं आध्यात्मिकरूप से ओतप्रोत था। आप सदैव जिनवाणी के प्रचार में प्रयासरत संस्थाओं के ट्रस्टी एवं विभिन्न सामाजिक कार्यों के संयोजक थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों-यही भावना है।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

विशेष सराहना मिली। सभी कार्यक्रमों में श्रीमंत सेठ धर्मेन्द्रकुमारजी जैन परिवार का विशेष सहयोग रहा। **– डॉ. सत्यप्रिय**

दिल्ली (विश्वास नगर) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसार पर एवं रात्रि में धन्यमुनिदशा विषय पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त श्रीमती स्वर्णलता जैन द्वारा प्रश्नमंच का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रात: पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान कराया गया एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर वस्त्रापुर स्थित दि. जैन मंदिर में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में विभिन्न विषयों पर प्रवचन का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रूप में विविध पौराणिक कथाओं का सुन्दर प्रस्तुतिकरण भी पण्डित संजयजी के निर्देशन में ही हुआ।

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत स्थापित दो मन्दिर श्री सीमन्धर जिनालय एवं अध्यात्मधाम श्री ऋषभायतन में ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित रितेशजी शास्त्री पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन प्रात:काल नित्यनियम पूजन के उपरान्त ब्र. हेमचंदजी द्वारा प्रात: प्रवचनसार की गाथा 1 से 50 तक एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी नानावटी, श्री वीतराग–महिला मण्डल एवं युवा व महिला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में आयोजित किये गये।

इस अवसर पर ब्र. हेमचंदजी द्वारा 'धर्म विज्ञान की कसौटी पर' विषय पर एक विशेष व्याख्यान भी दिया गया। **– प्रकाशचंद पाण्ड्या**

मंगलायतन–अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन नित्य नियम पूजन के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन हुये। इसी प्रसंग पर डॉ. दीपकजी जैन जयपुर द्वारा समयसार, जैनदर्शन में कर्मसिद्धान्त एवं दशलक्षण धर्म पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में मंगलार्थी छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

इस अवसर पर पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया द्वारा भी प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अशोकजी भीलवाड़ा पंचकल्याणक हेतु कोटा, भीलवाड़ा, नीमच एवं चित्तौड़गढ भी गये, जहाँ उनके प्रवचनों का लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ।

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा दशलक्षण धर्म एवं विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। यहाँ 24 से 30 दिसम्बर तक होने वाले पंचकल्याणक संबंधी विशेष दिशा–निर्देश भी प्राप्त हुये।

दिनांक 29 सितम्बर से 4 अक्टूबर तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर बिजौलिया में पंच दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं पण्डित देवेन्द्रजी जैन बिजौलिया द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

उदयपुर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर मुमुक्षु मण्डल में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री बिजौलिया द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

कारंजा (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के बच्चों के लिए मोक्षमार्गप्रकाशक पर कक्षा का भी आयोजन किया गया।

मुम्बई (घाटकोपर) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के पश्चात् पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री काटोल द्वारा समयसार के पुण्य–पाप अधिकार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अनिलजी जैन, पण्डित भावेशजी जैन एवं दिव्या जैन द्वारा संपन्न कराये गये। प्रवचन हेतु सर्वोदय हॉस्पिटल ने हॉल की व्यवस्था की थी।

इस अवसर पर विशेष उपलब्धि के रूप में प्रतिदिन समाज में स्वाध्याय की गतिविधि प्रारंभ होनी निश्चित हुई है।

एरणाकुलम–कोचिन (केरल) : यहाँ श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मुमुक्षु चैत्यालय में डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन तथा भक्तामर स्तोत्र की कक्षा हुई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। **– शैलेष एम.दोशी**

गंजबासौदा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन तारणतरण समैया समाज में पण्डित केसरीचन्दजी 'धवल' द्वारा ममलपाहुड के आधार से दशधर्मों का वर्णन किया गया।

फुटेरा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: नित्य नियम पूजन के अतिरिक्त ब्र. धर्मेन्दजी जैन द्वारा दशलक्षण धर्म पर एवं पण्डित सुशीलजी शास्त्री द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार पर श्रावक के बारह व्रत विषय पर प्रवचन हुये।

मुम्बई–जोगेश्वरी (पूर्व) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा 'पंचलब्धि' विषय पर व्याख्यान हुये, जिसका स्थानीय समाज ने लाभ लिया।

कानपुर–किदवई नगर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरान्त पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म एवं पण्डित अखिलेशजी शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर गांधीनगर में पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित चेतनजी जैन द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

प्रात: सामूहिक पूजन के अतिरिक्त रात्रि में जूनियर महिला मण्डल, सौरभजी शास्त्री व चेतनजी शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

देवली–टोंक (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनालय में पण्डित संजयजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रात: पूजन के आधार पर प्रवचन, दोपहर में सात तत्त्व विषय पर कक्षा, सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

नातेपुते (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: सामूहिक पूजन के

उपरान्त पण्डित विवेककुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा समयसार के कर्ता–कर्म अधिकार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। **– चेतन दोशी**

वाशिम (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर जवाहर कॉलोनी स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार, दोपहर में मंगलाष्टक के अर्थ, सायंकाल विषापहार स्तोत्र का अर्थ एवं रात्रि में परमार्थ वचनिका पर प्रवचन हुये।

सायंकाल श्रीमती स्वस्ति विराग जैन द्वारा बाल कक्षा का संचालन किया गया एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **– संतोष पाटनी**

दलपतपुर–सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रात: विदुषी अनु शास्त्री द्वारा इष्टोपदेश पर, दोपहर में विदुषी नयना शास्त्री द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर एवं रात्रि में स्थानीय विद्वान पण्डित निखलेशजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय राजेन्द्र पार्क में पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर द्वारा प्रात: पूजन के उपरान्त विभिन्न विषयों पर प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रवचन के उपरान्त शंका समाधान कार्यक्रम भी रखा गया। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

सागर (म.प्र.) : यहाँ महावीर जिनालय में ब्र. बासंतीबेन देवलाली एवं अन्य ब्र.बहनों द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। अन्य बहनों ने दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का अर्थ सहित वाचन एवं पंचलब्धि विषय की कक्षा ली। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। **– संतोष जैन**

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर लाला गोकुलचन्द दिगम्बर जैन मंदिर लोहामण्डी में पण्डित धनेन्द्रजी सिंहल द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय गंज में प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

मड़ावरा–ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित आशीष कुमारजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: व दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। **– देवकीनन्दन जैन**

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर मणिनगर में नित्यनियम पूजन के उपरान्त गुरुदेवश्री का सी.डी.प्रवचन एवं तत्पश्चात् पण्डित मीठाभाई दोशी हिम्मतनगर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में स्वानुभूतिदर्शन के ऊपर तत्त्वचर्चा हुई। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा कार्यक्रम एवं सांस्कृतिक कायक्रमों का भी आयोजन हुआ। **– डॉ. संजय जे. मेहता**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

अलवर के विविधि उपनगरों में ...

अलवर (राज.) : यहाँ विभिन्न मंदिरों में दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न हुआ, जिसका विवरण निम्नानुसार है –

1. श्री रत्नत्रय जिनालय : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित जयकुमारजी कोटा द्वारा नियमसार एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित अमोलजी महाजन व पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री द्वारा विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

2. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, शान्तिकुंज : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अजितजी शास्त्री द्वारा मध्यलोक में स्थित जिनालयों की रचना तथा 13 द्वीपों की रचना का संक्षिप्त परिचय दिया गया। इसके अतिरिक्त इन्द्रध्वज मण्डल विधान श्री तिमांशुजी अलवर के सहयोग से पण्डित पीयूषजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा संपन्न कराया गया।

3. श्री सम्भवनाथ दिगम्बर जैन मंदिर शिवाजी पार्क : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर रात्रि में पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री के प्रवचन हुये। तत्पश्चात् श्री संभवनाथ दिगम्बर जैन नवयुवक मण्डल तथा महिला मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

विधि–विधान के कार्य पण्डित प्रेमचन्दजी जैन द्वारा कराये गये। विधान के मध्य में तेरह द्वीप के चैत्यालयों की समय–समय पर जानकारी भी दी गई, साथ ही समागत विषय वस्तु का भी परिचय कराया गया।

4. श्री महावीर जिनालय कालाकुआं : यहाँ पर्व के अवसर पर नित्य नियम पूजन के अतिरिक्त पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

5. श्री दिगम्बर जिनमंदिर 60 फुट रोड़ : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अमोलजी महाजन शास्त्री द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये।

विशेष : दिनांक 28.9.2012 को शहर विधायक श्री बनवारीलालजी सिंघल के करकमलों से 'सर्वोदय अहिंसा अभियान' के अन्तर्गत प्रकाशित पटाखे विरोधी पोस्टर का विमोचन किया गया।

इसके अतिरिक्त शहर के अन्य पंचायती मंदिरों में विधान एवं प्रवचनों का आयोजन समाज द्वारा किया गया। **– अजितकुमार शास्त्री**

हार्दिक बधाई !

जैनदर्शन के अध्येता विद्वान डॉ. वीरसागरजी जैन का दिनांक 16 सितम्बर को भट्टारकजी की नसियां में जैन विद्या संस्थान द्वारा उनके द्वारा रचित ग्रन्थ ''भारतीय दर्शन में आत्मा एवं परमात्मा'' के लिए महावीर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. वीरसागरजी टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के होनहार विद्यार्थी हैं और वर्तमान में तत्त्वप्रचार के कार्यों के साथ–साथ लालबहादुर शास्त्री वि.वि. दिल्ली में जैनदर्शन विभाग में प्राध्यापक हैं। आपकी अनेक मौलिक एवं सम्पादित कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

तीर्थराज सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के –

सौधर्म इन्द्र श्री अजित जैन का स्वागत एवं पत्रिका विमोचन समारोह संपन्न

बड़ौदा (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट द्वारा शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन एवं पात्रों का सम्मान समारोह दिनांक 15 सितम्बर को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री शोभाबेन रसिकलाल धारीवाल पुणे एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बसन्तभाई एम. दोशी मुम्बई, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री हितेनभाई शेठ मुम्बई, श्री विमलजी जैन दिल्ली, श्री निहालचंदजी जैन जयपुर, श्री रमेशचंदजी दोशी, श्री अक्षयभाई दोशी मुम्बई, श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद, लाला अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री भरतभाई टिम्बडिया कोलकाता, श्री परेशजी बखारिया मुम्बई, श्री राजूभाई अहमदाबाद, श्री प्रतीकभाई अहमदाबाद, श्री विजयकुमारजी जैन पाटनी अहमदाबाद, श्री आलोक कुमार जैन कानपुर, श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. वासन्तीबेन मुम्बई आदि महानुभाव उपस्थित थे।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से श्री अजितजी जैन बड़ौदा का प्रशस्ति-पत्र भेंटकर सम्मान करते हुए डॉ. भारिल्ल, पं. रतनचंदजी भारिल्ल, पं. विपिनजी शास्त्री खुम्बई एवं श्रीमती कमला भारिल्ल

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, ब्र. हेमन्तभाई गांधी, पण्डित मुकेशजी शास्त्री विदिशा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में पंचकल्याणक के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री अजितभाई-अनिताबेन बड़ौदा का ट्रस्ट की ओर से प्रशस्ति-पत्र, शॉल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी ने बिना किसी भेदभाव के सभी प्रांतों के अनेक भाषा-भाषी जैन भाई-बहनों को एक जाजम पर बैठा दिया। सभी को तत्त्व के आधार पर संगठित कर दिया। इसी प्रकार रसिकभाई ने भी अपनी उदारता से सम्पूर्ण जैन समाज का हृदय जीता है। अजितभाई भी उसी लाइन पर चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त पंचकल्याणक के माता-पिता डॉ. शरद-माधवी जैन भोपाल एवं प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली का भी सम्मान किया गया। साथ ही ब्रह्मदत्त भोजनालय एवं मुमुक्षु भवन के निर्माण के प्रमुख दानदाता श्रीमती शोभाबेन रसिकलाल धारीवाल एवं श्री रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा श्री अजितजी जैन को 'समाजरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। इसके अतिरिक्त चैतन्यधाम अहमदाबाद, श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, तीर्थधाम मंगलायतन, गजपंथा सिद्धक्षेत्र ट्रस्ट, श्री कुन्दकुन्द परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर, अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली, दिगम्बर जैन समाज बड़ौदा की 13 संस्थाएं आदि अनेक संस्थाओं द्वारा सौधर्म इन्द्र का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने किया। भव्य कार्यक्रम का सफल निर्देशन श्री कश्यप अजित जैन ने, आर.एस.ए. टीम बड़ौदा एवं सकल दिगम्बर जैन समाज बड़ौदा के सहयोग से किया।

क्षमावाणी एवं विद्वत् सम्मान समारोह संपन्न

दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र पर ब्र. संध्या बहन शिकोहाबाद, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज एवं विदुषी राजकुमारी जैन दिल्ली द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विमल कुमार कुसुम जैन परिवार, विवेक विहार दिल्ली द्वारा समयसार महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर द्वारा संपन्न कराये गये।

दिनांक 30 सितम्बर को क्षमावणी पर्व के अवसर पर विशाल सभा का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली के विभिन्न उपनगरों में प्रवचनार्थ गये 47 विद्वानों का ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री विमलकुमारजी, श्री पृथ्वीचंदजी, श्री अजितप्रसादजी, श्री आदीशजी, श्री सुमतिकुमारजी सेठिया द्वारा सम्मान किया गया। सभी स्थानों पर विद्वानों द्वारा पूजन, प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

सम्मान समारोह के अध्यक्ष श्री सुभाषचंदजी जैन नांगलोई एवं मुख्य अतिथि श्री आर.सी. जैन (न्यायाधीश) थे।

इस अवसर पर सोनगढ, राजकोट, अहमदाबाद, ऐटा, खंडवा, जामनगर, इन्दौर, महाराष्ट्र, मुम्बई आदि स्थानों से लगभग 250 साधर्मीजन उपस्थित थे। संपूर्ण कार्यक्रम के निर्देशक ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री थे।

पर्व के दौरान 47 स्थानों में से 25 स्थानों पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री द्वारा प्रवचन एवं सम्मेदशिखर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का हार्दिक आमंत्रण दिया गया। **– सुमतिकुमार सेठिया**

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

(103) चौथा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तथा जो ज्ञान पाँच इन्द्रियों व छठवें मन के द्वारा प्रवर्त्तता था, वह ज्ञान सब ओर से सिमटकर इस निर्विकल्प अनुभव में केवल स्वरूप-सन्मुख हुआ; क्योंकि वह ज्ञान क्षयोपशमरूप है; इसलिए एक काल में एक ज्ञेय ही को जानता है, वह ज्ञान स्वरूप जानने को प्रवर्त्तित हुआ तब अन्य का जानना सहज ही रह गया। वहाँ ऐसी दशा हुई कि बाह्य अनेक शब्दादिक विकार हों तो भी स्वरूप ध्यानी को कुछ खबर नहीं – इसप्रकार मतिज्ञान भी स्वरूपसन्मुख हुआ। तथा नयादिक के विचार मिटने पर श्रुतज्ञान भी स्वरूपसन्मुख हुआ।

ऐसा वर्णन समयसार की टीका आत्मख्याति में है तथा आत्माव-लोकनादि में है। इसीलिए निर्विकल्प अनुभव को अतीन्द्रिय कहते हैं; क्योंकि इन्द्रियों का धर्म तो यह है कि स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, शब्द को जानें, वह यहाँ नहीं है; और मन का धर्म यह है कि अनेक विकल्प करे, वह भी यहाँ नहीं है; इसलिए यद्यपि जो ज्ञान इन्द्रिय-मन में प्रवर्त्तता था, वही ज्ञान अब अनुभव में प्रवर्त्तता है; तथापि इस ज्ञान को अतीन्द्रिय कहते हैं।[१]''

उक्त प्रकरण में सविकल्प से निर्विकल्प होने का जो स्वरूप स्पष्ट किया है; उसमें व्यवहार धर्मध्यान और निश्चय धर्मध्यान का स्वरूप भी स्पष्ट हो गया है।

उक्त प्रक्रिया में सर्वप्रथम भेदज्ञान करने को कहा गया है, जिसमें स्त्री-पुत्रादि और शरीररूप नोकर्म, ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म और मोह-राग-द्वेषरूप भावकर्मों से रहित ज्ञानानन्दस्वभावी निज आत्मा का स्वरूप, अध्ययन, श्रवण, मनन-चिन्तनपूर्वक जानने की बात कही है।

उक्त प्रक्रिया में चलते-चलते परसंबंधी विकल्प भी टूट जाता है, केवल स्वात्मविचार ही रहता है और विविध प्रकार से अपने में अपनापन स्थापित हो जाता है।

इसप्रकार की स्थिति में आनंद की तरंगें उठती हैं और आत्मार्थी जीव रोमांचित हो उठता है, विकल्प समूह समाप्त हो जाते हैं और ज्ञानमात्र आत्मा ही प्रतिभासित होने लगता है; आत्मा आत्मामय हो जाता है और ज्ञान-दर्शन और प्रमाण-नय के विकल्प भी विलीन हो जाते हैं; ध्याता, ध्यान और ध्येय के विकल्प भी नहीं रहते हैं।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४२-३४४

उक्त कथन को बल प्रदान करने के लिए पण्डित टोडरमलजी नयचक्र का उद्धरण प्रस्तुत करते हैं और रत्नहार खरीदने व पहिनने का उदाहरण देते हैं। समयसार गाथा १४४ की टीका में समागत मतिज्ञान और श्रुतज्ञान के आत्मसम्मुख करने की प्रक्रिया की ओर भी ध्यान आकर्षित करते हैं।

अन्त में यह भी कहते हैं कि यह अनुभव अतीन्द्रिय अनुभव है। इसी अनुभव को कहीं-कहीं मनजनित भी कह देते हैं; क्योंकि यह समस्त प्रक्रिया मति-श्रुतज्ञान में ही सम्पन्न होती है।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि आपने तो कहा था कि सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि या सम्यग्दृष्टि सविकल्पदशा से निर्विकल्पदशा किसप्रकार प्राप्त करते हैं ? पर उत्तर में पण्डित टोडरमलजी की रहस्यपूर्णचिट्ठी का जो अंश उद्धृत किया, उसमें मात्र सम्यग्दृष्टि की ही बात आई है।

अरे, भाई ! दोनों ही स्थितियों में लगभग एक सी ही प्रक्रिया चलती है; अत: इसमें कोई विरोध नहीं है।

उक्त प्रकरण का भाव आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''देखो, यह स्वानुभव की अलौकिक चर्चा ! यहाँ तो एकबार जिसको स्वानुभव हो गया है और फिर से वह निर्विकल्प स्वानुभव करता है, उसकी बात की है; परन्तु पहली बार भी जो निर्विकल्प स्वानुभव का उद्यम करता है, वह भी इसीप्रकार से भेदज्ञान व स्वरूपचिन्तन के अभ्यास द्वारा परिणाम को निजस्वरूप में तल्लीन करके स्वानुभव करता है।[१]

एक बार ऐसा निर्विकल्प अनुभव जिसके हुआ हो, उसके ही निश्चय-सम्यक्त्व है – ऐसा जानना।[२]

देखो तो सही, इसमें चैतन्य की अनुभूति के कितने रस का घोलन हो रहा है ! ऊपर जितना वर्णन किया, वहाँ तक तो अभी सविकल्पदशा है। **इस चिन्तन में जो आनन्द-तरंगें उठती हैं, वह निर्विकल्प अनुभूति का आनन्द नहीं है; परन्तु स्वभाव की तरफ के उल्लास का आनन्द है और इसमें स्वभाव की तरफ के अतिशय प्रेम के कारण रोमांच हो उठता है। रोमांच अर्थात् विशेष उल्लास; स्वभाव के प्रति विशेष उत्साह।[३]**

इसके बाद चैतन्यस्वभाव के रस की उग्रता होने पर ये विचार (विकल्प) भी छूट जायें और परिणाम अन्तर्मग्न होकर केवल चिन्मात्र-स्वरूप भासने लगें, सर्व परिणामस्वरूप में एकाग्र होकर वर्ते उपयोग स्वानुभव में प्रवर्ते – इसी का नाम निर्विकल्प आनन्द का अनुभव है। वहाँ दर्शन-ज्ञान-चारित्र संबंधी या नय-प्रमाणादि का कोई विचार नहीं रहता,

१. अध्यात्म-सन्देश, पृष्ठ ५० २. वही, पृष्ठ ५०-५१
३. अध्यात्म-सन्देश, पृष्ठ ५३

सभी विकल्पों का विलय हो जाता है।[१]

सविकल्प के द्वारा निर्विकल्प में आया - ऐसा उपचार से कहा जाता है। स्वरूप के अनुभव का उद्यम करने में प्रथम उसकी सविकल्प विचारधारा चलती है, उसमें सूक्ष्म राग व विकल्प भी होते हैं, परन्तु उस राग को या विकल्प को साधन बनाकर स्वानुभव में नहीं पहुँचा जाता; राग का व विकल्पों का उल्लंघन करके सीधा आत्मस्वभाव का अवलम्बन लेकर उसे ही साधन बनावें, तभी आत्मा का निर्विकल्प स्वानुभव होता है और तभी जीव कृतकृत्य होता है। शास्त्रों में इसका अपार माहात्म्य किया गया है।[२]

'विचार करने में तो विकल्प होता है' - ऐसा समझकर कोई जीव विचारधारा में ही न प्रवर्ते तो कहते हैं कि **रे भाई! विचार में अकेले विकल्प ही तो नहीं है; 'विचार' में साथ-साथ ज्ञान भी तत्त्वनिर्णय का कार्य कर रहा है। अत: इनमें से ज्ञान की मुख्यता कर और विकल्प को गौण बना दे। ऐसे स्वरूप का अभ्यास करते-करते ज्ञान का बल बढ़ जायेगा, तब विकल्प टूट जायेगा और ज्ञान ही रह जायेगा,** अतएव विकल्प से भिन्न ज्ञान अन्तर्मुख होकर स्वानुभव करेगा; परन्तु जो जीव तत्त्व का अन्वेषण ही नहीं करता, आत्मा की विचारधारा ही जो नहीं चलाता, उसे तो निर्विकल्प स्वानुभव कहाँ से होगा।[३]''

स्वामीजी के उक्त कथन में अत्यन्त स्पष्टरूप से यह कहा गया है कि जब कोई सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्व के नाश और सम्यक्त्व की प्राप्ति के लिए आगमानुसार विचार करता है, चिन्तन करता है; तब उसमें अकेले विकल्प ही नहीं रहते, विचार ही नहीं रहते; साथ में ज्ञान भी अत्यन्त सक्रिय रहता है। उक्त प्रक्रिया से ज्ञान का बल बढ़ता है, विकल्प टूट जाते हैं, विचार रुक जाते हैं और ज्ञान निर्विकल्प दशारूप परिणमित हो जाता है।

अरे, भाई! विकल्प दो प्रकार के होते हैं। एक तो रागात्मक विकल्प और दूसरे ज्ञान का स्वरूप जो भेद करके जाननेरूप है, उसे भी विकल्प कहते हैं। जहाँ विकल्पों के अभाव या नाश की बात होती है, वहाँ रागात्मक विकल्पों की बात होती है; क्योंकि जो विकल्प ज्ञान के स्वरूप में शामिल हैं, उनका अभाव न तो संभव है और न इष्ट ही।

इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि सम्यग्दृष्टि जीव जब सविकल्प से निर्विकल्पदशा को प्राप्त करता है; तब उसको मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषाय के अभावरूप शुद्धपरिणति, लब्धिज्ञान में आत्मोपलब्धि और उक्त त्रिकाली ध्रुव में अपनेपनरूप सम्यग्दर्शन विद्यमान रहता है; अत: उसमें यह प्रश्न उपस्थित नहीं होता कि वह शुभभावरूप विकल्पों के बल से निर्विकल्प हुआ है; पर सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि जब सविकल्प से निर्विकल्प होता है, तब यह प्रश्न उपस्थित होता है; क्योंकि उसके पास श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र की निर्मलता का बल नहीं है।

इस आशंका का समाधान करते हुए स्वामीजी कहते हैं कि **सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि के तत्त्वविचार में जो ज्ञान का वृद्धिंगत बल है, उससे ही यह कार्य सम्पन्न होता है।**

इसप्रकार यह सुनिश्चित ही है कि पहले भगवान आत्मा का सही स्वरूप विकल्पात्मक ज्ञान में आता है और उसके बाद उसमें अपनेपन के बल से, आत्मरुचि की तीव्रता से ज्ञान का बल बढ़ता है।

बढ़ते हुए ज्ञानबल से विकल्पात्मक निर्णय निर्विकल्प अनुभव में परिणमित हो जाता है।

सविकल्प से निर्विकल्प होने की यही विधि है। ●

१. अध्यात्म-सन्देश, पृष्ठ ५३ २. वही, पृष्ठ ५६
३. वही, पृष्ठ ५९

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होनेवाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में **दिनांक 9 सितम्बर** को **'दशलक्षण महापर्व : एक अनुशीलन' भाग -1** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. प्रभाकरजी सेठी ने की। सभा का संचालन मयंक जैन भिण्ड एवं अनुज जैन ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से रमन जैन तथा शास्त्री वर्ग से समर्पण जैन व सनत जैन को चुना गया।

2. दिनांक 16 सितम्बर को **'दशलक्षण महापर्व : एक अनुशीलन' भाग -2** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. कमलेशजी जैन ने की। सभा का संचालन गोमटेश्वर चौगुले एवं अभिषेक इन्दौर ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सिद्धार्थ जैन उपाध्याय कनिष्ठ तथा वैभव जैन उपाध्याय वरिष्ठ को चुना गया।

'मोना' ने मनाया दशलक्षण महापर्व

मोना (मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका) द्वारा टेलिफोन एवं कम्प्यूटर के माध्यम से दशलक्षण पर्व मनाया गया। प्रात: गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के पश्चात् ब्र. हेमन्तभाई गांधी द्वारा ustream पर प्रवचन सायंकाल विदुषी अल्पना भारिल्ल शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ नॉर्थ अमेरिका एवं भारत के अनेक मुमुक्षुओं ने लिया। इसके अतिरिक्त नित्यनियम पूजन एवं प्रतिक्रमण का भी कार्यक्रम हुआ।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

21 से 30 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
3 नवम्बर	अलीगढ	दीक्षान्त समारोह
10 से 14 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
24 से 29 नवम्बर	सम्मेदशिखर	पंचकल्याणक
25 से 30 दिसम्बर	भीलवाड़ा	पंचकल्याणक

डॉ. भारिल्ल द्वारा क्षमावाणी पर विशेष प्रवचन

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ क्षमावाणी के अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का तीन दिवसीय कार्यक्रम रखा गया।

चूड़ी बाजार स्थित शांतिनाथ दि. जैन मंदिर में डॉ. भारिल्ल का सम्मान करते हुए

इस अवसर पर चूड़ी बाजार स्थित शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में डॉ. भारिल्ल द्वारा क्षमावणी पर प्रवचन हुआ। यहाँ साधर्मियों ने प्रथम बार क्षमावाणी पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों को सुना। प्रवचन में क्षमावाणी क्या है, उसका क्या महत्व है, क्षमा किससे और क्यों मांगी जाती है, स्वयं के जीवन में क्षमा की क्या उपयोगिता है इत्यादि विषय का ज्ञान तत्त्वरसिक जिज्ञासुओं को हुआ। यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित राजेशजी शास्त्री गुडा द्वारा दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुये थे। समाज के अध्यक्ष श्री अजयकुमारजी ने डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण कर व शॉल ओढाकर सम्मान किया।

इसके पश्चात् शंकर नगर स्थित चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में सायंकाल डॉ. भारिल्ल का प्रवचन रखा गया, जहाँ समाज के अध्यक्ष श्री कमलकुमारजी पाटनी व मंदिर के सचिव श्री पी.सी. जैन ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। तत्पश्चात् उनका क्षमावाणी विषय पर प्रवचन हुआ। यहाँ पर भी अनेक साधर्मियों ने प्रवचन का लाभ लिया। यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित रामनरेशजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुये थे।

तत्पश्चात् टैगोर नगर स्थित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में डॉ. भारिल्ल द्वारा 'मैं स्वयं भगवान हूँ' विषय पर व्याख्यान हुआ। प्रवचन के पूर्व श्रीमती ममता जैन ने डॉ. भारिल्ल का परिचय समाज को दिया। प्रवचनोपरान्त समाज के अध्यक्ष जीवनलालजी जैन एवं सचिव श्री अजयजी जैन ने शॉल ओढाकर व श्रीफल भेंटकर उनका सम्मान किया।

डॉ. भानावत जैन अनुशीलन केन्द्र के निदेशक

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान विश्वविद्यालय के जनसंचार केन्द्र के प्रो. संजीव भानावत को विश्वविद्यालय के जैन अनुशीलन केन्द्र का तीन वर्षों के लिए मानद निदेशक नियुक्त किया गया है। गत तीन दशकों से मीडिया शिक्षण के साथ जुड़े प्रो. भानावत ने देश-विदेश के अनेक सम्मेलनों में सहभागिता की है। वे 13 वर्षों से मीडिया त्रैमासिक कम्यूनिकेशन जुड़े का सम्पादन कर रहे हैं। इन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के गठन में डॉ. भानावत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इस उपलब्धि पर जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

हार्दिक बधाई !

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय आशुभाषण प्रतियोगिता में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रेजीडेन्सी, उदयपुर की छात्रा कु. पायल जैन सुपुत्री डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इस उपलक्ष्य में बोर्ड द्वारा 1500/- रुपये नकद एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

2. दिल्ली निवासी श्री धनपाल सिंह जैन (कपड़े वालों) एवं श्रीमती रेशम देवी जैन के सुपौत्र श्रीमती आरती एवं श्री जिनेन्द्र कुमार जैन के सुपुत्र चि. पुलकित जैन का शुभ विवाह सौ. रुचिका जैन पौत्री श्री महेन्द्र चन्द जैन पुत्री श्रीमती पूनम एवं श्री संजय कुमार जैन करोलबाग नई दिल्ली के साथ दिनांक 30 जून को संपन्न हुआ। आपकी ओर से 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

3. कोलकाता निवासी श्री महावीरप्रसादजी सरावगी द्वारा 1 सितम्बर को 74वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 300-300/- रुपये प्राप्त हुये।

4. श्री सुरेशचंदजी जैन (रिजर्व बैंक वाले) की ओर से दिनांक 10 अक्टूबर को पौत्र के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 250-250/- रूपये प्राप्त हुये।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

डॉ. संजय शाह सम्मानित

नई दिल्ली : यहाँ 'इण्डियन सोसायटी ऑफ इन्टरनेशनल लॉ, वी.के. कृष्णन मेनन भवन में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शाह बांसवाड़ा को दिनांक 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर स्वतन्त्र मंच द्वारा प्रमाण-पत्र एवं शॉल ओढाकर 'शिक्षक श्री' अवार्ड से सम्मानित किया गया।

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127